आरती एवं चालीसा कोश

॥श्रीराम जय राम जय जय राम॥

आरती एवं चालीसा कोश

- श्री हनुमान बाहुक
- श्री मुण्डमालातंत्रोक्त महाविद्यास्तोत्रम्

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि

धियो यो नः प्रचोदयात्।

संकलन : बृज मोहन तिवारी

BMT

आमुख

भारतीय धार्मिक परंपरा में आरतियों और चालीसाओं का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये केवल स्तुति-पाठ नहीं, बल्कि आत्मा के उस परमात्मा से जुड़ने का मधुर माध्यम हैं। श्रद्धा, आस्था और भक्ति भाव से परिपूर्ण इन रचनाओं को एकत्रित कर, सुव्यवस्थित रूप में पुस्तकाकार देने का उद्देश्य यही रहा है कि अधिक से अधिक भक्तजन इस दिव्य अनुभूति से जुड़ सकें।

इस पुस्तक में सम्मिलित आरतियां और चालीसायें वर्षों से जनमानस में पूजनीय रही हैं। इन्हें टाइपसेट कर, प्रूफ रीडिंग और प्रस्तुति सहित संकलित करने का कार्य श्रद्धा और समर्पण के साथ किया गया है। इस प्रयास में भाषिक परिमार्जन और पाठ शुद्धीकरण में अपने अनुभवी पत्रकार सहकर्मियों द्वारा अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से योगदान दिया गया है, जिसके लिए मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

इस संकलन का उद्देश्य किसी प्रकार की व्यावसायिकता नहीं, अपितु भक्तिमार्ग को सरल बनाना है – जिससे पाठकों को एक ही स्थान पर प्रामाणिक, शुद्ध और व्यवस्थित पाठ उपलब्ध हो सके।

यदि यह प्रयास किसी एक भी साधक की भक्ति में वृद्धि करे, तो मैं इसे अपनी सफलता समझूँगा।

आरती एवं चालीसा कोश

अनुक्रमणिका

1.	श्री गुरु वंदना	5
2.	श्री गणेश चालीसा	7
3.	श्री गणेश आरती	10
4.	श्री राम चालीसा	12
5.	श्री रामजन्म छंद	16
6.	श्री राम स्तुति	17
7.	श्री हनुमान चालीसा	18
8.	श्री संकटमोचन हनुमानाष्टक	21
9.	श्री बजरंग बाण	24
10.	श्री हनुमानबाहुक	27
11.	श्री हनुमान आरती	47
12.	श्री शिव चालीसा	48
13.	श्री शिव स्तुति	51
14.	श्री शिवाष्टक	54
15.	श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्	56
16.	श्री त्रिदेव आरती	58
17.	श्री कमल नेत्र स्तोत्र	59
18.	श्री महादेव आरती	62
19.	श्री शनिदेव चालीसा	64
20.	श्री शनिदेव आरती	67
21.	श्रीदुर्गा चालीसा	68
22.	श्रीअम्बा आरती	71
23.	श्रीविन्ध्येश्वरी चालीसा	73
24.	श्रीवैष्णो देवी चालीसा	76
25.	श्रीवैष्णो देवी आरती	79

BMT

26.	श्रीचामुण्डा देवी चालीसा	80
27.	श्रीचामुण्डा देवी आरती	83
28.	श्री महावीर (तीर्थंकर) चालीसा	85
29.	श्रीनैना देवी आरती	88
30.	श्रीकाली आरती	90
31.	श्रीमहाकाली आरती	92
32.	श्रीअहोई अष्टमी आरती	94
33.	श्रीलक्ष्मी जी की आरती	96
34.	श्रीगायत्री आरती	97
35.	श्री सत्यनारायण जी की आरती	99
36.	श्री कुंजबिहारी जी की आरती	101
36.	आरती श्री जय जगदीश हरे	103
37.	श्रीमद् भागवत् पुराण आरती	105
38	श्रीगंगा आरती	107
39.	श्री सिद्ध बाबा बालक नाथ आरती	108
40.	सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्	109
41.	श्री महिषासुरमर्दिनी (संकटा) स्तोत्रम्	112
42.	श्री मुण्डमालातन्त्रोक्त महाविद्यास्तोत्रम्	118
43.	क्षमा प्रार्थना	121
44.	अपराध क्षमायाचना	122

आरती एवं चालीसा कोश

श्री गुरु वंदना

गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना।
गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
करुणानिधि नाम तेरा, करुणा दिखला जाओ।
सोये हुए भाग्यों को, हे नाथ जगा जाओ।
मेरी नाव भंवर डोले, इसे पार लगा देना॥
गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना।
गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
पापी हूँ या कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ।
छोड़ मोहमाया मैं, चरणों में तेरे आया हूँ।
भटका हुआ राही हूँ, मुझे राह दिखा देना॥
गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना।
गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
तुम ही मेरे मात-पिता, तुम ही मेरे बंधु-सखा।

BMT

तुम ही गुरु जीवन के, भक्ति का मार्ग दिखाना।
अपनी कृपा बरसा कर, भवसागर पार कराना॥
गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना।
गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
तुम सुख के सागर हो, भक्तों के सहारे हो।
इस तन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो।
नित माला जपूं तेरी, नहीं दिल से भुला देना॥
गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना।
गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
अजर अमर स्वामी, तुम हो अंतर्यामी।
मैं दीन हीन चंचल, अभिमानी, अज्ञानी।
तुमने जो नज़र फेरी, फिर मेरा कौन ठिकाना॥
गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना।
गुरुदेव दया करके, मुझको अपना लेना।

श्री गणेश चालीसा

॥ दोहा ॥

जय गणपति सद्गुण सदन, करिवर वदन कृपाल।
विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय गणपति गणराजू। मंगल भरण करण शुभ काजू॥
जय गजवदन सदन सुखदाता। विश्वविनायक बुद्धि विधाता॥
वक्रतुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन। तिलक त्रिपुण्ड भाल मनभावन॥
राजत मणि मुक्तन उर माला। स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला॥
पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं। मोदक भोग सुगन्धित फूलं॥
सुन्दर पीताम्बर तन साजित। चरण पादुका मुनि मन राजित॥
धनि शिव सुवन षडानन भ्राता। गौरी ललन विश्व विख्याता॥
ऋद्धि सिद्धि तव चंवर सुधारे। मूषक वाहन सोहत द्वारे॥
कहौं जन्म शुभ कथा तुम्हारी। अति शुचि पावन मंगलकारी॥
एक समय गिरिराज कुमारी। पुत्र हेतु तप कीन्हों भारी॥
भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा। तब पहुँच्यो तुम धरि द्विज रूपा॥
अतिथि जानि के गौरि सुखारी। बहुविधि सेवा करी तुम्हारी॥

BMT

अति प्रसन्न है तुम वर दीन्हा। मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा॥

मिलहिं पुत्र तुहि बुद्धि विशाला। बिना गर्भ धारण यहि काला॥

गणनायक गुण ज्ञान निधाना। पूजित प्रथम रूप भगवाना॥

अस कहि अन्तर्धान रूप है। पलना पर बालक स्वरूप है॥

बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना। लखि मुख सुख नहिं गौरि समाना॥

सकल मगन सुख मंगल गावहिं। नभ ते सुरन सुमन वर्षावहिं॥

शम्भु उमा बहु दान लुटावहिं। सुर मुनिजन सुत देखन आवहिं॥

लखि अति आनन्द मंगल साजा। देखन को आए शनि राजा॥

निज अवगुण गनि शनि मन माहीं। बालक देखन चाहत नाहीं॥

गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायो। उत्सव मोर न शनि तुहि भायो॥

कहन लगे शनि मन सकुचाई। का करिहों शिशु मोहि दिखाई॥

नहिं विश्वास उमा उर भयऊ। शनि सों बालक देखन कह्यऊ॥

पड़तहिं शनि दृगकोण प्रकाशा। बालक सिर उड़ि गयो अकाशा॥

गिरिजा गिरी विकल है धरणी। सो दुःख दशा जाय नहिं वरणी॥

हाहाकार मच्यो कैलाशा। शनि कीन्हों लखि सुत का नाशा॥

तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधाये। काटि चक्र सो गजशिर लाये॥

बालक के धड़ ऊपर धारयो। प्राण मंत्र पढ़ि शंकर डारयो॥

नाम 'गणेश' शम्भु तब दीन्हां। प्रथम पूज्य बुद्धिनिधि कीन्हां॥

बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हां। पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हां॥

चले षडानन भरमि भुलाई। रचे बैठि तुम बुद्धि उपाई॥

चरण मातु पितु के धर लीन्हें। तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें॥

धनि गणेश कही शिव हिय हर्ष्यो। नभ ते सुरन सुमन बहु वर्ष्यो॥

तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई। शेष सहस मुख सके न गाई॥

विश्वकर्मा द्वय सुता सुहावन। ऋद्धि सिद्धि संज्ञा मनभावन॥

तिन्हहिं संग तुम ब्याह रचाया। चहूँ ओर मुद मंगल छाया॥

मैं मतिहीन मलीन दुखारी। करहुँ कौन विधि विनय तुम्हारी॥

भजत 'राम सुन्दर' प्रभुदासा। जग प्रयाग, ककरा, दुर्वासा॥

अब प्रभु दया दीन पर कीजै। अपनी भक्ति शक्ति कुछ दीजै॥

॥ दोहा ॥

श्री गणेश की चालीसा, पाठ करै धरि ध्यान।

नित नव मंगल गृह बसै, लहे जगत सन्मान॥

संवत् अपन सहस्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश।

पूरण चालीसा भयो, मंगल मूर्ति गणेश॥

BMT

श्री गणेश आरती

जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी॥
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥
हार चढ़ें फूल चढ़ें और चढ़ें मेवा।
लड्डूअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा॥
दीनन की लाज राखो, शुम्भ-सुत-वारी।
कामना को पूरी करो, जग बलिहारी॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
उमा-शंभु सुत सुंदर, जगत जाय बलिहारी।
लम्बोदर गणनायक देवा, भक्तन हितकारी॥
ऋद्धि सिद्धि के स्वामी, मूषक असवारी।
करते हैं तव वन्दन, हाथ जोड़ नर-नारी॥

आरती एवं चालीसा कोश

प्रथम आपको पूजत, शुभ मंगल दाता।
सिद्ध होय सब कारज, दुःख दरिद्र मिट जाता॥
विद्यारम्भ विवाह समय जो, प्रथम आपको ध्यावे।
आजीवन वह प्राणी, सदा सफलता पावे॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥
श्वेत अंग श्वेताम्बरधारी, श्वेत पुष्प चढ़ते।
रत्नसिंहासन सोहे, सुर नर सब भजते॥
विघ्नान्तक विघ्नेश्वर स्वामी, विघ्न सभी हरते।
हे गणनायक नमन आपको, शुभ सबका कर दे॥
एकदन्त हे महाकाय प्रभु, वक्रतुण्ड कहलाते।
धूम्रवर्ण हे विकट विनायक, गुण बन्दीजन गाते॥
गणपति जी की आरती, जो कोई नर गावै।
वह बैकुण्ठ परम पद निश्चित ही पावै॥
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा॥

BMT

श्री राम चालीसा

॥ एक श्लोकी रामायण ॥

आदौ रामतपोवनादि गमनं हत्वा मृगं काञ्चनं।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीव सम्भाषणम्॥
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम्
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम्॥

॥ चौपाई ॥

श्री रघुवीर भक्त हितकारी। सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी॥
निशि दिन ध्यान धरै जो कोई। ता सम भक्त और नहिं होई॥
ध्यान धरे शिवजी मन माहीं। ब्रह्मा इन्द्र पार नहिं पाहीं॥
जय जय जय रघुनाथ कृपाला। सदा करो सन्तन प्रतिपाला॥
दूत तुम्हार वीर हनुमाना। जासु प्रभाव तिहूँ पुर जाना॥
तव भुजदण्ड प्रचण्ड कृपाला। रावण मारि सुरन प्रतिपाला॥
तुम अनाथ के नाथ गोसाईं। दीनन के हो सदा सहाई॥
ब्रह्मादिक तव पार न पावैं। सदा ईश तुम्हरो यश गावैं॥
चारिउ वेद भरत हैं साखी। तुम भक्तन की लज्जा राखी॥
गुण गावत शारद मन माहीं। सुरपति ताको पार न पाहीं॥

गणपति नाम तुम्हारो लीन्हों। तिनको प्रथम पूज्य तुम कीन्हों॥
शेष रटत नित नाम तुम्हारा। महि को भार शीश पर धारा॥
फूल समान रहत सो भारा। पावत कोउ न तुम्हरो पारा॥
भरत नाम तुम्हरो उर धारो। तासों कबहुँ न रण में हारो॥
नाम शत्रुघन हृदय प्रकाशा। सुमिरत होत शत्रु कर नाशा॥
लषन तुम्हारे आज्ञाकारी। सदा करत सन्तन रखवारी॥
ताते रण जीते नहिं कोई। युद्ध जुरे यमहूँ किन होई॥
महालक्ष्मी धर अवतारा। सब विधि करत पाप को छारा॥
घट सों प्रकट भई सो आई। जाको देखत चन्द्र लजाई॥
सो तुमरे नित पांव पलोटत। नव निधि नित में लोटत॥
सिद्धि आठहूँ मंगल कारी। सो तुम पर जावै बलिहारी॥
औरहु जो अनेक प्रभुताई। सो सीतापति तुमहिं बनाई॥
इच्छा ते कोटिन संसारा। रचत न लागत पल की बारा॥
जो तुम्हरे चरनन चित लावै। ताको मुक्ति अवसि हो जावै॥
तुमहिं देव कुलदेव हमारे। तुम गुरु देव प्राण के प्यारे॥

BMT

जो कुछ हो सो तुमहीं राजा। जय जय जय प्रभु राखो लाजा॥
जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरूपा। निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा॥
सत्य सत्य सत्य व्रत स्वामी। सत्य सनातन अन्तर्यामी॥
सत्य भजन तुम्हरो जो गावै। सो निश्चय चारों फल पावै॥
सत्य शपथ गौरीपति कीन्हीं। तुम भक्तहिं सब सिद्धि दीन्हीं॥
धन्य धन्य तुम धन्य प्रतापा। नाम तुम्हार हरत संतापा॥
सत्य शुद्ध देवन मुख गाया। बजी दुन्दुभी शंख बजाया॥
सत्य सत्य तुम सत्य सनातन। तुमहीं हो हमरे तन मन धन॥
याको पाठ करे जो कोई। ज्ञान प्रकट ताके उर होई॥
आवागमन मिटै तिहि केरा। सत्य वचन माने शिव मेरा॥
और आस मन में जो होई। मनवांछित फल पावे सोई॥
तीनहूं काल ध्यान जो ल्यावैं। तुलसी दल अरु फूल चढ़ावैं॥
साग पत्र सो भोग लगावैं। सो नर सकल सिद्धता पावैं॥
अन्त समय रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई॥
श्री हरि दास कहै अरु गावै। सो वैकुण्ठ धाम को पावै॥

॥ दोहा ॥

सात दिवस जो नेम कर, पाठ करे चित लाय।
हरिदास हरिकृपा से, अवसि भक्ति को पाय॥
राम चालीसा जो पढ़े, रामचरण चित लाय।
जो इच्छा मन में करै, सकल सिद्ध हो जाय॥

BMT

श्री रामजन्म छंद

भये प्रगट कृपाला, दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा, तनु घनस्यामा, निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला, नयन बिसाला, सोभासिंधु खरारी॥
कह दुइ कर जोरी, अस्तुति तोरी, केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना, बेद पुरान भनंता॥
करुना सुखसागर, सब गुन आगर, जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी, जन अनुरागी, भयउ प्रकट श्रीकंता॥
ब्रह्मांड निकाया, निर्मित माया, रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी, यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना, प्रभु मुसुकाना, चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई, मातु बुझाई, जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली, सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला, अति प्रियसीला, यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना, रोदन ठाना, होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं, हरिपद पावहिं, ते न परहिं भवकूपा॥

श्री राम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम्।
नवकंज लोचन, कंज मुख, कर कंज पद कंजारुणम्॥
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील नीरद सुंदरम्।
पटपीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्यवंश निकंदनम्।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ नंदनम्॥
शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग बिभूषणम्।
आजानुभुज शर चाप धर, संग्राम जित खरदूषणम्॥
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनम्॥
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुणा निधान सुजान शीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥
जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे॥

BMT

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवनकुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनिपुत्र पवनसुत नामा॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै॥
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे॥

लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना॥
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा॥

BMT

और मनोरथ जो कोइ लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै॥
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे॥
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा॥
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै॥
अंतकाल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई॥
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥
जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहिं बंदि महा सुख होई॥
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

॥ श्री संकटमोचन हनुमानाष्टक ॥

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब, छाँड़ी दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥
बालि की त्रास कपीस बसैं गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥
अंगद के सँग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया-सुधि प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥
रावण त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कही सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

BMT

बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्राण तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो।
आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥
रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥
बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देबिहीं पूजि भली बिधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत सँहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥
काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कुछ संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥

॥ दोहा ॥

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर॥

श्रीहनुमत्–वन्दन

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि॥

BMT

बजरंग बाण

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥
जन के काज विलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै॥
जैसे कूदि सिन्धु महिपारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥
आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुरलोका॥
जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परमपद लीन्हा॥
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा। अति आतुर यमकातर तोरा॥
अक्षय कुमार को मारि सँहारा। लूम लपेटि लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुर पुर महँ भई॥
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अन्तर्यामी॥
जय जय लछमन प्राण के दाता। आतुर होइ दुख करहु निपाता॥
जय गिरिधर जय जय सुखसागर। सुर समूह समरथ भटनागर॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरिहिं मारु बज्र की कीले॥

गदा वज्र लै बैरिहिं मारो। महाराज प्रभु दास उबारो॥
ॐकार हुँकार महाबीर धावो। वज्र गदा हनु विलम्ब न लावो॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा। ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा॥
सत्य होहु हरि शपथ पायके। राम दूत धरु मारु धाय के॥
जय जय जय हनुमन्त अगाधा। दुःख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत हौं दास तुम्हारा॥
वन उपवन मग, गिरि गृह माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥
पांय परौं कर जोरि मनावौं। येहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
जय अञ्जनि कुमार बलवन्ता। शंकर सुवन वीर हनुमन्ता॥
बदन कराल काल कुल घातक। राम सहाय सदा प्रति पालक॥
भूत प्रेत पिशाच निशाचर। अग्नि बेताल काल मारी मर॥
इन्हें मारु, तोहि शपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की॥
जनकसुता हरि दास कहावो। ताकी शपथ विलम्ब न लावो॥
जय जय जय धुनि होत अकासा। सुमिरत होत दुःसह दुःख नासा॥
चरण शरण कर जोरि मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥
उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई। पांय परौं कर जोरि मनाई॥
ॐ चं चं चं चं चपल चंलता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता॥

BMT

बाँकुरो बीर बिरुदैत्त बिरुदावली,
बेद बंदी बदत पैजपूरो॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासु बल,
बिपुल जल भरित जग जलधि झूरो।
दुवन दल दमनको कौन तुलसीदास है,
पवन को पूत रजपूत रूरो॥ 3 ॥

घनाक्षरी

भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन,
अनुमानि सिसुकेलि कियो फेरफार सो।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन,
क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो॥
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि,
लोचननि चकाचौंधि चित्तनि खभार सो।
बल कैधौं बीररस, धीरज कै, साहस कै,
तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो॥ 4 ॥
भारत में पारथ के रथकेतु कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो।

आरती एवं चालीसा कोश

कह्यो द्रोन भीषम समीरसुत महाबीर,
बीर-रस बारि-निधि जाको बल जल भो॥
बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि,
फलँग फलाँगहूँ तें घाटि नभतल भो।
नाई-नाई माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं,
हनुमान देखें जगजीवन को फल भो॥ 5 ॥
गोपद पयोधि करि होलिका ज्यों लाई लंक,
निपट निसंक परपुर गलबल भो।
द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कंदुक-ज्यों कपि खेल बेल कैसो फल भो॥
संकट समाज असमंजस भो रामराज
काज जुग पूगनि को करतल पल भो।
साहसी समत्थ तुलसी को नाह जाकी बाँह,
लोकपाल पालन को फिर थिर थल भो॥ 6 ॥
कमठ की पीठि जाके गोड़नि की गाड़ैं मानो
नाप के भाजन भरि जलनिधि जल भो,
जातुधान-दावन परावन को दुर्ग भयो॥

BMT

महामीन बास तिमि तोमनि को थल भो॥
कुंभकरन-रावन पयोदनाद ईंधन को,
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान,
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो॥ 7 ॥
दूत रामराय को, सपूत पूत पौनको, तू
अंजनी को नंदन प्रताप भूरि भानु सो।
सीय सोच समन, दुरित दोष दमन,
सरन आये अवन, लखनप्रिय प्रान सो॥
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।
ज्ञान-गुनवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो॥ 8 ॥
दवन दुवन दल भुवन बिदित बल,
बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को।
पाप ताप तिमिर तुहिन विघटन पटु,
सेवक सरोरुह सुखद भानु भोर को॥

लोक-परलोक तें बिसोक सपने न सोक,
तुलसी के हिये है भरोसो एक ओर को।
राम को दुलारो दास बामदेव को निवास,
नाम कलि कामतरु केसरी किसोर को॥ 9 ॥
महाबल-सीम महाभीम महाबान इत,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को।
कुलिस कठोर तनु जोर परै रोर रन,
करुना कलित मन धारमिक धीर को॥
दुर्जन को काल सो कराल पाल सज्जन को,
सुमिरे हरनहार तुलसी की पीर को।
सीय-सुखदायक दुलारो रघुनायक को,
सेवक सहायक है साहसी समीर को॥10॥
रचिबे को बिधि जैसे, पालिबे को हरि, हर,
मीच मारिबे को, ज्याईबे को सुधापान भो।
धरिबे को धरनि, तरनि तम दलिबे को,
सोखिबे कृसानु, पोषिबे को हिम-भानु भो॥
खल-दु:ख दोषिबे को, जन-परितोषिबे को,

BMT

माँगिबो मलीनता को मोदक सुदान भो।
आरत की आरति निवारिबे को तिहुँ पुर,
तुलसी को साहेब हठीलो हनुमान भो॥11॥
सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँक को।
देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बापुरे बराक कहा और राजा राँक को॥
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँक को।
सब दिन रूरो परै पूरो जहाँ-तहाँ ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँक को॥12॥
सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी।
लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि,
तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी॥
केसरी किसोर बंदीछोर के नेवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधान की।

बालक-ज्यों पालि हैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की॥13॥
करुना निधान बलबुद्धि के निधान हौ,
महिमा निधान गुन ज्ञान के निधान हौ।
बाम देव रूप भूप राम के सनेही नाम,
लेत-देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ॥
आपने प्रभाव सीतानाथ के सुभाव सील,
लोक बेद बिधि के बिदुष हनुमान हौ।
मन की, बचन की, करम की तिहूँ प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ॥14॥
मन को अगम, तन सुगम किये कपीस,
काज महाराज के समाज साज साजे हैं।
देवबंदी छोर रनरोर केसरी किसोर,
जुग-जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं॥
बीर बरजोर घटि जोर तुलसी की ओर
सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे हैं।
बिगरी सँवार अंजनी कुमार कीजे मोहिं,

BMT

जैसे होत आये हनुमान के निवाजे हैं॥15॥

सवैया

जान सिरोमनि हो हनुमान सदा जनके मन बास तिहारो।
ढारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो॥
साहेब सेवक नाते तो हातो कियो सो तहाँ तुलसी को न चारो।
दोष सुनाये तैं आगेहुँ को होशियार ह्वै हों मन तौ हिय हारो॥16॥
तेरे थपे उथपै न महेस थपै थिर को कपि जे उर घाले।
तेरे निवाजे गरीब निवाज बिराजत बैरिन के उर साले॥
संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरी के से जाले।
बूढ़ भये बलि मेरिहिं बार कि हारि परे बहुतै नत पाले॥17॥
सिंधु तरे बड़े बीर दले खल जारे हैं लंक से बंक मवासे।
तैं रनि केहरि केहरि के बिदले अरि कुंजर छैल छवासे॥
तोसों समत्थ सुसाहेब सेइ सहै तुलसी दुख दोष दवासे।
बानरबाज! बढ़े खल खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवासे॥18॥
अच्छ बिमर्दन कानन भानि दसानन आनन भा न निहारो।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन से कुंजर केहरि बारो॥
राम प्रताप हुतासन कच्छ बिपच्छ समीर समीर दुलारो।

पापतें सापतें ताप तिहूँ तें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो॥19॥

घनाक्षरी

जानत जहान हनुमान को निवाज्यौ जन,
मन अनुमानि बलि, बोल न बिसारिये।
सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये॥
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भाँति,
मोदक मरै जो ताहि माहुर न मारिये।
साहसी समीर के दुलारे रघुबीरजू के,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये॥20॥
बालक बिलोकि बलि बारें तें आपनो कियो,
दीनबंधु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये।
रावरो भरोसो तुलसी के रावरोई बल,
आस रावरीयै दास रावरो बिचारिये॥
बड़ो बिकराल कलि काको न बिहाल कियो,
माथे पगु बलि को निहारि सो निबारिये।
केसरी किसोर रनरोर बरजोर बीर,

BMT

बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये॥21॥
उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरी कुमार बल आपनो सँभारिये।
राम के गुलामनि को कामतरु रामदूत,
मोसे दीन दूबरेको तकिया तिहारिये॥
साहेब समर्थ तोसों तुलसी के माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु बीर बाँधि मारिये।
पोखरी बिसाल बाँहु बलि बारिचर पीर,
मकरी ज्यौं पकरिकै बदन बिदारिये॥22॥
रामको सनेह राम साहस लखन सिय,
राम की भगति सोच संकट निवारिये।
मुद मरकट रोग बारिनिधि हेरि हारे,
जीव जामवंत को भरोसो तेरो भारिये॥
कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम पब्बयतें,
सुथल सुबेल भालू बैठिकै बिचारिये।
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न,
लंकिनी ज्यों लात घात ही मरोरि मारिये॥23॥

लोक परलोकहूँ तिलोक न बिलोकियत,
तोसे समरथ चष चारिहूँ निहारिये।
कर्म, काल, लोकपाल, अग-जग जीवजाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये॥
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये।
बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु बेलि,
उपजी सकेलि कपि केलि ही उखारिये॥24॥
करम कराल कंस भूमिपाल के भरोसे,
बकी बकभगिनी काहू तें कहा डरैगी।
बड़ी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,
बाँहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी॥
आई है बनाइ बेष आप ही बिचारि देख,
पाप जाय सबको गुनी के पाले परैगी।
पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपिकान्ह तुलसी की,
बाँहपीर महाबीर तेरे मारे मरैगी॥25॥
भाल की कि काल की कि रोष की त्रिदोष की है,

BMT

बादि भये देवता मनाये अधिकाति है॥
करतार भरतार हरतार कर्म काल,
को है जगजाल जो न मानत इताति है।
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो राम दूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पिराति है॥30॥
दूत रामराय को, सपूत पूत वाय को,
समत्थ हाथ पायको सहाय असहाय को।
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,
रावन सो भट भयो मुठिकाके धाय को॥
एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आज,
सीदत सुसेवक बचन मन काय को।
थोरी बाँहपीर की बड़ी गलानि तुलसी को,
कौन पाप कोप लोप प्रगट प्रभाय को॥31॥
देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं।
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम,
रामदूत की रजाइ माथे मानि लेत हैं॥

घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनुमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं।
क्रोध कीजे कर्म को प्रबोध कीजे तुलसी को,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं॥32॥
तेरे बल बानर जिताये रन रावन सों,
तेरे घाले जातुधान भये घर-घर के।
तेरे बल राम राज किये सब सुरकाज,
सकल समाज साज साजे रघुबर के॥
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरंचि हरि हर के।
तुलसी के माथे पर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिये न दास दुखी तोसो कनिगर के॥33॥
पालो तेरे टूक को परेहू चूक मूकिये न,
कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये।
भोरानाथ भोरे ही सरोष होत थोरे दोष,
पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये॥
अंबु तू हौं अंबुचर, अंब तू हौं डिंभ, सो न,

BMT

बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये।
बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसी की बाँह पर लामी लूम फेरिये॥34॥
घेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,
बासर जलद घन घटा धुकि धाई है।
बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस,
रोष बिनु दोष धूम मूल मलिनाई है॥
करुनानिधान हनुमान महाबलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजें तैं उड़ाई है।
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,
केसरी किसोर राखे बीर बरिआई है॥35॥

सवैया

राम गुलाम तुही हनुमान
गोसाँइ सुसाँइ सदा अनुकूलो।
पाल्यो हौं बाल ज्यों आखर दू
पितु मातु सों मंगल मोद समूलो॥
बाँह की बेदन बाँहपगार

पुकारत आरत आनँद भूलो।
श्री रघुबीर निवारिये पीर
रहौं दरबार परो लटि लूलो॥36॥

घनाक्षरी

काल की करालता करम कठिनाई कीधौं,
पाप के प्रभाव की सुभाय बाय बावरे।
बेदन कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,
सोई बाँह गही जो गही समीर डावरे॥
लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भो तयो है तिहुँ तावरे।
भूतनि की आपनी पराये की कृपानिधान,
जानियत सबही की रीति राम रावरे॥37॥
पाँय पीर पेट पीर बाँह पीर मुँह पीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है।
देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहि पर दवरि दमानक सी दई है।
हौं तो बिन मोल के बिकानो बलि बारे ही तें,

BMT

ओट रामनाम की ललाट लिखि लई है।
कुंभज के किंकर बिकल बूड़े गोखुरनि,
हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है॥38॥
बाहुक सुबाहु नीच लीचर मरीच मिलि,
मुँहपीर केतुजा कुरोग जातुधान हैं।
राम नाम जपजाग कियो चहों सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं॥
सुमिरे सहाय राम-लखन आखर दौऊ,
जिनके समूह साके जागत जहान हैं।
तुलसी सँभारि ताड़का सँहारि भारि भट,
बेधे बरगद से बनाइ बानवान है॥39॥
बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
रामनाम लेत माँगि खात टूक-टाक हौं।
पर्‌यो लोकरीति में पुनीत प्रीति रामराय,
मोहबस बैठो तोरि तरकि तराक हौं॥
खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अंजनी कुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं।

आरती एवं चालीसा कोश

तुलसी गुसाइँ भयो भोंड़े दिन भूलि गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं॥40॥
असन बसन हीन बिषम बिषाद लीन,
देखि दीन दूबरो करै न हाय-हाय को।
तुलसी अनाथ सो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सीलसिंधु आपने सुभाय को॥
नीच यहि बीच पति पाइ भरुहाइगो,
बिहाइ प्रभु-भजन बचन मन काय को।
तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि-फूटि निकसत लोन रामराय को॥41॥
जीओ जग जानकी जीवन को कहाइ जन,
मरिबे को बारानसी बारि सुरसरि को।
तुलसी के दुहूँ हाथ मोदक हैं ऐसे ठाउँ,
जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरि को॥
मोको झूठो साँचो लोग राम को कहत सब,
मेरे मन मान है न हर को न हरि को।
भारी पीर दुसह सरीर तें बिहाल होत,

BMT

सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करि को॥42॥
सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेस को महेस मानो गुरु कै।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुर कै॥
ब्याधि भूतजनित उपाधि काहु खल की,
समाधि कीजै तुलसी को जानि जन फुर कै।
कपिनाथ रघुनाथ भोलेनाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुर कै॥43॥
कहों हनुमान सों सुजान रामराय सों,
कृपानिधान संकर सों सावधान सुनिये।
हरष विषाद राग रोष गुन दोषमई,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये॥
माया जीव काल के करम के सुभाय के,
करै या राम बेद कहैं साँची मन गुनिये।
तुम्हतें कहा न होय हा-हा सो बुझैये मोहिं,
हौं हूँ रहों मौन ही बयो सो जानि लुनिये॥44॥

श्री हनुमान आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांके॥
अंजनि पुत्र महा बलदायी। संतन के प्रभु सदा सहायी॥
दे बीड़ा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सो कोट समुद्र-सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े सकारे। लाय संजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पाताल तोरि जम कारे। अहिरावण की भुजा उखारे॥
बाएं भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे॥
सुर नर मुनि जन आरती उतारे। जय जय जय हनुमान उचारे॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई॥
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई। तुलसीदास प्रभु कीरति गाई॥
जो हनुमानजी की आरती गावै। बसी बैकुंठ परमपद पावै॥

BMT

शङ्कर हो संकट के नाशन। मंगल कारण विघ्न विनाशन॥
योगी यति मुनि ध्यान लगावैं। नारद शारद शीश नवावैं॥
नमो नमो जय नमो शिवाय। सुर ब्रह्मादिक पार न पाय॥
जो यह पाठ करे मन लाई। ता पर होत हैं शम्भु सहाई॥
ऋषि या जो कोई हो अधिकारी। पाठ करे सो पावन हारी॥
पुत्रहीन कर इच्छा कोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई॥
पण्डित त्रयोदशी को लावे। ध्यान पूर्वक होम करावे॥
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा। ताके तन नहिं रहे कलेशा॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे। शङ्कर सम्मुख पाठ सुनावे॥
जन्म जन्म के पाप नसावे। अन्तवास शिवपुर में पावे॥
कहे अयोध्या आस तुम्हारी। हरहु हमारे सब दुःख भारी॥

॥दोहा॥

प्रातः पढ़ैं शिव चालिसा, नित्य झुकाकर शीश।
मन की मेरी कामना, पूर्ण करो जगदीश॥
मगसर छठि हेमन्त ऋतु, संवत् चौसठ जान।
अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण॥

शिव स्तुति

श्री गिरिजापति वंदि कर, चरण मध्य शिरनाय।
कहत अयोध्यादास तुम, मोपर होहु सहाय॥

नंदी की सवारी, नाग अंगीकार धारी नित,
संत सुखकारी, नीलकण्ठ त्रिपुरारी हैं॥
गले मुण्डमाला धारी, सिर सोहे जटाधारी,
वाम अंग में बिहारी गिरिजासुत वारी हैं॥
दानी देख भारी, शेष शारदा पुकारी,
काशीपति मदनारी, त्रिशूल करधारी हैं॥
कला उजियारी, लख देव सो निहारी,
यश गावें वेदचारी, सो हमारी रखवारी हैं॥
शम्भु बैठे हैं विशाला, भंग पीवें सो निराला,
नित रहै मतवाला, अहि अंग पै चढ़ाये हैं॥
गले सोहे मुंडमाला, कर डमरू विशाला,
अरु ओढ़े मृगछाला, तन भसम लगाये हैं॥
संग सुरभि सुतशाला, करें भक्त प्रतिपाला,
मृत्यु हरें अकाला, शीश जटा को बढ़ाये हैं॥

BMT

कहत रामलाला, करो मोहि तुम निहाला अब,
गिरिजापति कैलास जैसे काम को जलाये हैं॥
मारा है जलंधर और त्रिपुर को संहारा,
जिन जारा है काम जाके शीश गंगधारा है॥
धारा है अपार जासु महिमा है तीनों लोक,
भाल सौहे इन्दु, जाके सुषमा की सारा है॥
सारा अहिबात सब, खायो हलाहल जानि,
भक्तन के अधारा जाहि वेदन उचारा है॥
चारों हैं भाग जाके द्वारा हैं गिरीश कन्या,
कहत अयोध्या सोई मालिक हमारा है॥
अष्ट गुरु ज्ञानी, जाके मुख वेदबानी है,
सोहै भवन में भवानी सुख संपत्ति लहा करें॥
मुण्डन की माला जाके चंद्रमा ललाट सोहे,
दासन के दास जाके दारिद दहा करैं॥
चारों द्वार बन्दी, जाके द्वारपाल नंदी,
कहत कवि आनन्दी, नर नाहक हा हा करें॥

आरती एवं चालीसा कोश

जगत रिसाय, यमराज की कहा बसाय,
शंकर सहाय तो भयंकर कहा करै॥

सवैया

गौर श्याम में गौरी विराजत,
मोर जटा सिर सोहत जाके॥
नागन को उपवीत लसै कहै,
अयोध्या कहे शशि भाल में वाके॥
दान करै पल में फल चारि,
और टारत अंक लिखे विधना के॥
शंकर नाम निःशंक सदा ही,
भरोसे रहें निशिवासर ताके॥

दोहा

मगसर मास हेमंत ऋतु, छठ दिन है शुभ बुद्ध।
कहत अयोध्यादास तुम, शिव के विनय समृद्ध॥

BMT

श्री शिवाष्टक

आदि अनादि अनन्त अखण्ड, अछेद अभेद सुवेद बतावैं॥
अलख अगोचर रूप महेश कौ, जोगि जती मुनि ध्यान न पावैं॥
आगम निगम पुरान सबैं, इतिहास सदा जिनके गुन गावैं॥
बड़भागी नर–नारि सोई जो, साम्ब सदाशिव को नित ध्यावैं॥
सृजन सुपालन लय लीलाहित, जो विधि हरि हररूप बनावैं॥
एकहि आप विचित्र अनेक, सुबेस बनाईकैं लीला रचावैं॥
सुंदर सृष्टि सुपालन करि, जग पुनि बन काल जु खाय पचावैं॥
बड़भागी नर–नारि सोई जो, साम्ब सदाशिव को नित ध्यावैं॥
अगुन अनीह अनामय अज, अविकार सहज निजरूप धरावैं॥
परम सुरम्य बसन आभूषन, सजि मुनि मोहन रूप करावैं॥
ललित ललाट बाल बिधु बिलसै, रतन–हार उर पै लहरावैं॥
बड़भागी नर–नारि सोई जो, साम्ब सदाशिव को नित ध्यावैं॥
अंग बिभूति रमाय मसान की, बिषमय भुजंगनि कौं लपटावैं॥
नरकपाल कर मुंडमाल गल, भालु–चरम सब अंग उढ़ावैं॥
घोर दिगम्बर, लोचन तीन, भयानक देखि कै सब थर्रावैं॥
बड़भागी नर–नारि सोई जो, साम्ब सदाशिव को नित ध्यावैं॥

सुनतहि दीनकी दीन पुकार, दयानिधि आप उबारन आवैं।
पहुँच तहाँ अविलंब सुदारुन, मृत्यु को मर्म विदारि भगावैं॥
मुनि मृकंडु–सुत की गाथा सुचि, अजहुँ विज्ञ जन गाई सुनावैं॥
बड़भागी नर–नारि सोई जो, साम्ब सदाशिव को नित ध्यावैं॥
चाउर चारि जो फूल धतूर के, बेल के पात औ पानि चढ़ावैं।
गाल बजाय कै बोल जो, 'हरहर महादेव' धुनि जोर लगावैं॥
तिनहिं महाफल देयँ सदासिव, सहजहि भुक्ति–मुक्ति सो पावैं॥
बड़भागी नर–नारि सोई जो, साम्ब सदाशिव को नित ध्यावैं॥
बिनसि दोष दुख दुरित दैन्य, दारिद्र्य नित्य सुख–शांति मिलावैं॥
आसुतोष हर पाप ताप सब, निरमल बुद्धि चित्त बकसावैं॥
असरन–सरन काटि भवबंधन, भव निज भवन भव्य बुलवावैं॥
बड़भागी नर–नारि सोई जो, साम्ब सदाशिव कों नित ध्यावैं॥
औढरदानि उदार अपार जु, नैक–सी सेवा तें ढुरि जावैं॥
दमन अशांति समन सब संकट, बिरद बिचार जनहिं अपनावैं॥
ऐसे कृपालु कृपामय देव के, क्यों न सरन अबहीं चलि जावैं॥
बड़भागी नर–नारि सोई जो, साम्ब सदाशिव को नित ध्यावैं॥

BMT

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥ 1॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥ 2॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृंद-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥ 3॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥ 4॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥ 5॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥ 6॥

BMT

श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव, कृष्ण यदुपति केशवम्।
श्रीराम रघुवर, राम रघुवर, राम रघुवर राघवम्॥ 9 ॥
श्रीराम कृष्ण गोविन्द माधव, वासुदेव श्री वामनम्।
मच्छ-कच्छ वाराह नरसिंह, पाहि रघुपति पावनम्॥ 10 ॥
मथुरा में केशवराय विराजे, गोकुल बाल मुकुन्द जी।
श्री वृन्दावन में मदन मोहन, गोपीनाथ गोविन्द जी॥ 11 ॥
धन्य मथुरा धन्य गोकुल, जहाँ श्री पति अवतरे।
धन्य यमुना नीर निर्मल, ग्वाल बाल सखावरे॥ 12 ॥
नवनीत नागर करत निरन्तर, शिव विरंचि मन मोहितम्।
कालिन्दी तट करत क्रीड़ा, बाल अद्भुत सुन्दरम्॥ 13 ॥
ग्वाल बाल सब सखा विराजे, संग राधे भामिनी।
बंशी वट तट निकट यमुना, मुरली की टेर सुहावनी॥ 14 ॥
भज राघवेश रघुवंश उत्तम, परम राजकुमार जी।
सीता के पति भक्तन के गति, जगत प्राण आधार जी॥ 15 ॥
जनक राजा पनक राखी, धनुष बाण चढ़ावहीं।
सती सीता नाम जाके, श्री रामचन्द्र प्रणामहीं॥ 16 ॥
जन्म मथुरा खेल गोकुल, नन्द के हृदि नन्दनम्।

बाल लीला पतित पावन, देवकी वसुदेवकम्॥ 17 ॥
श्रीकृष्ण कलिमल हरण जाके, जो भजे हरिचरण को।
भक्ति अपनी देव माधव, भवसागर के तरण को॥ 18 ॥
जगन्नाथ जगदीश स्वामी, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
द्वारिका के नाथ श्री पति, केशवं प्रणमाम्यहम्॥ 19 ॥
श्रीकृष्ण अष्टपदपढ़तनिशदिन, विष्णु लोक सगच्छतम्।
श्रीगुरु रामानन्द अवतार स्वामी, कविदत्त दास समाप्तम्॥ 20 ॥

BMT

श्री महादेव आरती

जय शंकर शिवशंकर जय जय त्रिपुरारी।
जय सुरपति त्रिभुवन पति जय जय असुरारी॥
ॐ हर हर हर महादेव॥
सत्य सनातन सुन्दर शिव! सबके स्वामी।
अविकारी अविनाशी अज अन्तर्यामी॥ ॐ हर...॥
आदि अनन्त अनामय सकल कलाधारी।
अमल अरूप अगोचर अविचल अघहारी॥ ॐ हर...॥
क्षण मँह होत प्रसन्न सदाशिव तुम औढरदानी।
तुम ही कर्ता भर्ता महिमा जग जानी॥ ॐ हर...॥
मणिमय भवन निवासी, सब सम्पत्ति त्यागी।
नित श्मशाम विहारी योगी वैरागी॥ ॐ हर...॥
छाल कपाल गरल गल मुण्डमाल व्याली।
चिताभस्म तन शोभित नयन धरे लाली॥ ॐ हर...॥
प्रेत पिशाच सुसेवित पीत जटाधारी।
विवसन विकट रूपधर रुद्र प्रलयंकारी॥ ॐ हर...॥

शुभ्र सौम्य सुरसरिधर शशिधर सुखकारी।
अतिकमनीय शांतिकर शिव मुनि मनहारी॥ ॐ हर...॥
निर्गुण सगुण निरंजन नवतम नित्य प्रभो।
कालरूप केवल हर कालातीत विभो॥ ॐ हर...॥
सत् चित् आनन्द रसमय करुणामय धाता।
प्रेम–सुधा निधि प्रियतम अखिल विश्वत्राता॥ ॐ हर...॥
हम अति दीन दयामय! चरण शरण दीजै।
सबबिधि निर्मल मति कर अपना कर लीजै॥ ॐ हर...॥

BMT

श्री शनि चालीसा

॥दोहा॥

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दुःख दूर करि, कीजै नाथ निहाल॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज।
करहु कृपा हे रवितनय, राखहु जन की लाज॥

जयति जयति शनिदेव दयाला। करत सदा भक्तन प्रतिपाला॥
चारि भुजा तनु श्याम विराजे। माथे रतन मुकुट छवि छाजै॥
परम विशाल मनोहर भाला। टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला॥
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके। हिये माल मुक्तन मणि दमके॥
कर में गदा त्रिशूल कुठारा। पल बिच करैं अरिहिं संहारा॥
पिंगल कृष्णो छाया नन्दन। यम कोणस्थ, रौद्र दुःखभंजन॥
सौरि मन्द शनि दशा नामा। भानु पुत्र पूजहिं सब कामा॥
जापर प्रभु प्रसन्न हुई जाहीं। रंकहु राउ करें क्षण माहीं॥
पर्वतहू तृण होई निहारत। तृणहू को पर्वत करि डारत॥
राज मिलत बन रामहि दीन्हा। कैकइहू की मति हरि लीन्हा॥
बनहू में मृग कपट दिखाई। और जानकी गई चुराई॥

आरती एवं चालीसा कोश

लषणहि शक्ति बिकल करि डारा। मचिगई दल में हाहाकारा॥
रावण की गति मति बौराई। रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई॥
दियो कीट करि कंचन लंका। बजि बजरङ्ग वीर को डंका॥
नृप विक्रम पर जब पगु धारा। चित्र मयूर निगलि गै हारा॥
हार नौलखा लाग्यो चोरी। हाथ पैर डरवायो तोरी॥
भारी दशा निकृष्ट दिखायो। तेलिहुँ घर कोल्हू चलवायौ॥
विनय राग दीपक मँह कीन्हो। तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हो॥
हरिश्चन्द्रहुं नृप नारि बिकानी। आपहुँ भरे डोम घर पानी॥
तैसे नल पर दशा सिरानी। भूंजी मीन कूद गई पानी॥
श्री शंकरहिं गह्यो जब जाई। पारवती को सती कराई॥
तनि बिलोकत ही करि रीसा। नभ उड़ि गयो गौरि सुत सीसा॥
पाण्डव पर ह्वै दशा तुम्हारी। बची द्रौपदी होति उधारी॥
कौरव की भी गति मति मारी। युद्ध महाभारत करि डारी॥
रवि कहँ मुख मँह धरि तत्काला। लेकर कूदि परयो पाताला॥
शेष देव लखि विनती लाई। रवि को मुख ते दियो छुड़ाई॥
वाहन प्रभु के सात सुजाना। जग दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना॥

BMT

जम्बुक सिंह आदि नख धारी। सो फल ज्योतिष कहत पुकारी॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं। हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं॥
गर्दभ हानि करें बहु काजा। सिंह सिद्धकर राज समाजा॥
जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै। मृग दे कष्ट प्राण संहारै॥
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी। चोरी आदि होय डर भारी॥
तैसहि चारि चरण यह नामा। स्वर्ण लौह चाँदी अरु तामा॥
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं। धन जन सम्पति नष्ट करावैं॥
समता ताम्र रजत शुभकारी। स्वर्ण सर्व सुख मंगल भारी॥
जो यह शनि चरित नित गावै। कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै॥
अद्भुत नाथ दिखावैं लीला। करें शत्रु के नशि बलि ढीला॥
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई। विधिवत शनि ग्रह शांति कराई॥
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत। दीप दान दै बहु सुख पावत॥
कहत रामसुन्दर प्रभु दासा। शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा॥

॥दोहा॥

पाठ शनिश्चर देव को, कियो भक्त तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार॥

श्री शनिदेव जी की आरती

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी॥
जय जय श्री शनिदेव...॥

श्याम अंक वक्र दृष्टि चतुर्भुजा धारी॥
नीलाम्बर धारी नाथ गज की असवारी॥
जय जय श्री शनिदेव...॥

क्रीट मुकुट शीश सहज दिपत है लिलारी।
मुक्तन की माल गले शोभित बलिहारी॥
जय जय श्री शनिदेव...॥

मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी॥
जय जय श्री शनिदेव...॥

देव दनुज ऋषि मुनि सुरत नर नारी।
विश्वनाथ धरत शरण हैं तुम्हारी॥
जय जय श्री शनिदेव...॥

BMT

श्रीदुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी। नमो नमो अम्बे दुःख हरनी॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी। तिहूँ लोक फैली उजियारी॥
शशि ललाट मुख महा विशाला। नेत्र लाल भृकुटि विकराला॥
रूप मातु को अधिक सुहावे। दरश करत जन अति सुख पावे॥
तुम संसार शक्ति लय कीना। पालन हेतु अन्न धन दीना॥
अन्नपूर्णा हुई जग पाला। तुम ही आदि सुन्दरी बाला॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी। तुम गौरी शिव शंकर प्यारी॥
शिव जोगी तुम्हरे गुण गावैं। ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं॥
रूप सरस्वती को तुम धारा। दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा॥
धरा रूप नृसिंह को अम्बा। परगट भई फाड़ कर खम्बा॥
रक्षा करि प्रह्लाद बचायो। हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं। श्री नारायण अंग समाहीं॥
क्षीरसिन्धु में करत बिलासा। दयासिन्धु दीजै मन आसा॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी। महिमा अमित न जात बखानी॥
मातंगी धूमावति माता। भुवनेश्वरि बगला सुख दाता॥
श्री भैरव तारा जग तारिणी। छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी॥

केहरि वाहन सोहे भवानी। लांगुर बीर चलत अगवानी॥
कर में खप्पर खड्ग विराजै। जाको देख काल डर भाजै॥
सोहै अस्त्र और त्रिशूला। जाते उठत शत्रु हिय शूला॥
नगरकोट में तुम्ही विराजत। तिहूँ लोक में डंका बाजत॥
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे। रक्तबीज शंखन संहारे॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी। जेहि अघ भार मही अकुलानी॥
रूप कराल कालो को धारा। सेन सहित तुम तिहि संहारा॥
परी गाढ़ संतन पर जब जब। भई सहाय मातु तुम तब तब॥
अमर पुरी अरु बासव लोका। तव महिमा सब रहें अशोका॥
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी। तुम्हें सदा पूजें नर–नारी॥
प्रेम भक्ति से जो जस गावै। दुःख दारिद्र निकट नहि आवै॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई। जन्म मरण ताको छुटि जाई॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी। योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी॥
शंकर आचारज तप कीन्हो। काम क्रोध जीति सब लीन्हो॥
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को। काहु काल नहिं सुमिरो तुमको॥
शक्ति रूप का मरम न पायो। शक्ति गई तब मन पछितायो॥

BMT

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू॥जय...॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता सुख सम्पति करता॥जय...॥
भुजा चार अति शोभित, वरमुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत सेवत नर नारी॥जय...॥
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
(श्री) मालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योती॥जय...॥
(श्री) अम्बेजी की आरति जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावै॥जय...॥

श्रीविन्ध्येश्वरी चालीसा

॥दोहा॥

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब।
सन्त जनों के काज हित, करतीं नहीं विलम्ब॥

जय जय जय विन्ध्याचल रानी। आदि शक्ति जग विदित भवानी॥
सिंहवाहिनी जय जगमाता। जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता॥
कष्ट निवारिणी जय जगदेवी। जय जय सन्त असुर सुर सेवी॥
महिमा अमित अपार तुम्हारी। शेष सहस मुख वर्णत हारी॥
दीनन के दु:ख हरत भवानी। नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी॥
सब कर मनसा पुरवत माता। महिमा अमित जगत विख्याता॥
जो जन ध्यान तुम्हारो लावै। सो तुरतहि वांछित फल पावै॥
तुम्हीं वैष्णवी तुम्हीं रुद्राणी। तुम्हीं शारदा अरु ब्रह्माणी॥
रमा राधिका श्यामा काली। तू ही मातु सन्तन प्रतिपाली॥
उमा माधवी चण्डी ज्वाला। बेगि मोहि पर होहु दयाला॥
तुम्हीं हिंगलाज महरानी। तुम्हीं शीतला अरु विज्ञानी॥
दुर्गा दुर्ग विनाशिनि माता। तुम्हीं लक्ष्मी जग सुखदाता॥
तुम्हीं जाह्नवी जगत् तारिणी। हेमावति अम्बे निरवाणी॥

BMT

अष्टभुजी देवी वाराही। ब्रह्मा हरि हर सेवत ताही॥
चौंसट्ठी देवी कल्यानी। गौरी मंगला सब गुन खानी॥
पाटन मुम्बा दन्त कुमारी। भद्रकाली सुन विनय हमारी॥
वज्र धारिणी शोक नाशिनी। आयु रक्षिणी विन्ध्यवासिनी॥
जया और विजया बैताली। मातु संकटा अरु विकराली॥
आद्या तुम ही जया अनंता। वसुमति तनया दुर्गमहंता॥
तुम्हीं भ्रामरी रक्तदंतिका। नित हित कर माते सब ही का॥
नाम अनन्त तुम्हार भवानी। बरनैं किमि मानुष अज्ञानी॥
जा पर कृपा मातु तव होई। तो वह करै चहै मन जोई॥
कृपा करहु मो पर महारानी। सिद्ध करें अम्बे मम बानी॥
जो नर धरै मातु कर ध्याना। ताकर होय सदा कल्याना॥
विपत्ति ताहि सपनेहु नहिं आवै। जो देवी का जाप करावै॥
जो नर कहँ ऋण होय अपारा। सो नर पाठ करै शतबारा॥
निश्चय ऋण मोचन होइ जाई। जो नर पाठ करै मन लाई॥
अस्तुति जो नर पढ़ै पढ़ावे। या जग में सो बहु सुख पावै॥
जाको व्याधि सतावै भाई। जाप करत सब दूरि पराई॥
जो नर अति बन्दी महँ होई। बार हज़ार पाठ कर सोई॥

निश्चय बंदी ते छुट जाई। सत्य वचन मम मानहुँ भाई॥
जापर जो कछु संकट होई। निश्चय देविहिं सुमिरे सोई॥
जा कहँ पुत्र होय नहिं भाई। सो नर या विधि करे उपाई॥
पाँच वर्ष सौ पाठ करावै। नौरातर में विप्र जिमावै॥
निश्चय होहिं प्रसन्न भवानी। पुत्र देहिं ताकहँ गुण खानी॥
ध्वजा नारियल आन चढ़ावै। विधि समेत पूजन करवावै॥
नित प्रति पाठ करै मन लाई। प्रेम सहित नहिं आन उपाई॥
यह श्री विन्ध्येश्वरि चालीसा। रंक पढ़त होवे अवनीसा॥
यह जनि अचरज मानहुँ भाई। कृपा दृष्टि जापर होई जाई॥
जय जय जय जगमातु भवानी। कृपा करहु मुझ पर महरानी॥

BMT

श्रीवैष्णो देवी चालीसा

गरुड़ वाहिनी वैष्णवी, त्रिकुटा पर्वत धाम।
काली, लक्ष्मी, सरस्वती, शक्ति तुम्हें प्रणाम॥

॥चौपाई॥

नमो नमो वैष्णो वरदानी। कलि काल में शुभ कल्याणी॥
मणि पर्वत पर ज्योति तुम्हारी। पिण्डी रूप में हो अवतारी॥
देवि-देवता अंश दियो है। रत्नाकर घर जन्म लियो है॥
करी तपस्या राम को पाऊँ। त्रेता की शक्ति कहलाऊँ॥
कहा राम मणि पर्वत जाओ। कलियुग की देवी कहलाओ॥
विष्णु रूप से कल्की बनकर। लूंगा शक्ति रूप बदलकर॥
तब तक त्रिकुटा घाटी जाओ। गुफा अंधेरी जाकर पाओ॥
काली-लक्ष्मी-सरस्वती माँ। करेंगी पोषण पार्वती माँ॥
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर द्वारे। हनुमत, भैरों प्रहरी प्यारे॥
ऋद्धि सिद्धि चंवर डुलावें। कलियुग-वासी पूजन आवें॥
पान-सुपारी ध्वजा नारियल। चरणामृत चरणों का निर्मल॥
दिया फलित वर माँ मुस्काई। करन तपस्या पर्वत आई॥
कलि काल की भड़की ज्वाला। इक दिन अपना रूप निकाला॥

कन्या बन नगरोटा आई। योगी भैरों दिया दिखाई॥
रूप देख सुन्दर ललचाया। पीछे-पीछे भागा आया॥
कन्याओं के साथ मिली माँ। कौल-कन्दोली तभी चली माँ॥
देवा माई दर्शन दीना। पवन रूप हो गई प्रवीणा॥
नवरात्रों में लीला रचाई। भक्त श्रीधर के घर आई॥
योगिन को भण्डारा दीना। सबने रुचिकर भोजन कीना॥
मांस, मदिरा भैरों मांगी। रूप पवन कर इच्छा त्यागी॥
बाण मार कर गंगा निकली। पर्वत भागी हो मतवाली॥
एक शिला पर चरण धरे जब। चरण-पादुका नाम पड़ा तब॥
पीछे भैरों था बलकारी। गुफा शीश पर जाय पधारी॥
नौ महिने तक किया निवासा। चली फोड़कर किया प्रकाशा॥
आद्या शक्ति ब्रह्म कुमारी। कहलाई माँ आद कुंवारी॥
गुफा द्वार पहुँची मुस्काई। लांगुर वीर ने आज्ञा पाई॥
भागा-भागा भैरों आया। रक्षा हित निज शस्त्र चलाया॥
पड़ा शीश जा पर्वत ऊपर। किया क्षमा जा दिया उसे वर॥
अपने संग में पुजवाऊंगी। भैरों घाटी बनवाऊंगी॥

BMT

पहले मेरा दर्शन होगा। पीछे तेरा सुमिरन होगा॥
बैठ गई माँ पिण्डी होकर। चरणों में बहता जल झर झर॥
चौंसठ योगिनी-भैरों बावन। सप्त ऋषि आ करते सुमरन॥
घंटा ध्वनि पर्वत पर बाजे। गुफा निराली सुन्दर लागे॥
भक्त श्रीधर पूजन कीन्हा। भगती सेवा का वर लीन्हा॥
सेवक ध्यानू तुमको ध्याया। ध्वजा व चोला आन चढ़ाया॥
सिंह सदा दर पहरा देता। पंजा शेर का दुःख हर लेता॥
जम्बू द्वीप महाराज मनाया। सर सोने का छत्र चढ़ाया॥
हीरे की मूरत संग प्यारी। जगे अखण्ड इक जोत तुम्हारी॥
आश्विन चैत्र नवरात्रे आऊं। पिण्डी रानी दर्शन पाऊं॥
सेवक 'मोहन' शरण तिहारी। हरो वैष्णो विपत हमारी॥

॥ दोहा ॥

है माँ कलियुग बीच तव, महिमा अपरम्पार,
घटता जाता धर्म है, लो माँ उसे उबार॥

श्रीवैष्णो देवी जी की आरती

जय वैष्णवी माता, मैया जय वैष्णवी माता।
द्वार तुम्हारे जो भी आता, बिन मांगे सब कुछ पा जाता॥मैया...॥
तू चाहे जो कुछ भी कर दे, तू चाहे तो जीवन दे दे।
राजा रंक बने तेरे चेले, चाहे पल में जीवन ले ले॥मैया...॥
मौत-ज़िंदगी हाथ में तेरे, मैया तू है लाटां वाली।
निर्धन को धनवान बना दे, मैया तू है शेरा वाली॥मैया...॥
पापी हो या होहिं पुजारी, राजा हो या रंक भिखारी।
मैया तू है जोता वाली, भवसागर से तारण हारी॥मैया...॥
तू ने नाता जोड़ा सबसे, जिस-जिस ने जब तुझे पुकारा।
शुद्ध हृदय से जिसने ध्याया, तुमने सबको दिया सहारा॥मैया...॥
मैं मूरख अज्ञानी भारी, तू जगदम्बे सबको प्यारी।
सिद्ध कामना करने वाली, अब है तेरे भगत की बारी॥मैया...॥

BMT

श्रीचामुण्डा देवी चालीसा

॥ दोहा ॥

नीलवर्ण माँ कालिका, रहतीं सदा प्रचण्ड।
दिया प्राण हर युद्ध में, चण्ड मुण्ड को दण्ड॥
दस हाथों में शस्त्र ले, करी धर्म की जीत।
मेरी भी बाधा हरो, हों जो कर्म पुनीत॥

॥ चौपाई ॥

नमस्कार चामुण्डा माता। तीनों लोकों में विख्याता॥
हिमगिरि तेरा परम धाम है। महाशक्ति तुमको प्रणाम है॥
मार्कण्डेय ऋषि ने ध्याया। कैसे प्रगटीं भेद बताया॥
शुम्भ निशुम्भ असुर बलशाली। तीनों लोक किए जो खाली॥
वायु अग्नि यम कुबेर संग। सूर्य चंद्र वरुण हुए तंग॥
अपमानित चरणों में आए। गिरिराज हिमालय को लाए॥
भद्रा-रौद्रा नित्या ध्याया। चेतन शक्ति करके बुलाया॥
क्रोधित होकर काली आई। जिसने निज लीला दिखलाई॥
चण्ड मुण्ड और शुम्भ पठाए। कामुक वैरी लड़ने आए॥
प्रथम दूत सुग्रीव संहारा। भगा चण्ड फिर मारा मारा॥

अरबों सैनिक लेकर आया। कुपित धूम्रलोचन था धाया॥
जैसे ही उसने ललकारा। 'हुं' शब्द गुंआ के मारा॥
मची असुर सेना में भगदड़। फाड़े सिंह ने उनके सिर-धड़॥
चण्ड-मुण्ड वध करने आए। मदिरा पीकर के गुर्राए॥
चतुरंगी सेना संग लाए। ऊँचे ऊँचे शिखर गिराए॥
तुमने क्रोधित रूप निकाला। प्रगटीं पहन गले मुण्ड माला॥
चर्म की साड़ी चीते वाली। हड्डी ढांचा था बलशाली॥
विकराल मुखी आँखें दिखलाईं। जिसे देख दुनिया घबराई॥
चण्ड मुण्ड ने चक्र चलाया। खड्ग मार कर काट गिराया॥
पापियों का कर दिया निस्तारा। चण्ड मुण्ड दोनों को मारा॥
कर में मस्तक ले मुस्काई। पापी सेना तब घबराई॥
सरस्वती माँ तुम्हें पुकारा। पड़ा चामुण्डा नाम तिहारा॥
चण्ड मुण्ड की मृत्यु सुनकर। कालक मौर्या आए रथ पर॥
अरब खरब युद्ध के पथ पर। झोंक दिए सब चामुण्डा पर॥
उग्र चण्डिका प्रगटीं आकर। गीदड़ियों की वाणी भरकर॥
काली खट्वांग घूसों से मारा। ब्रह्माणी फेंकी जल धारा॥

BMT

मैया जय चामुण्डा माता।

हनुमत बाला योगी, ठाढ़े बलशाली।
कारज पूरण करती, दुर्गा महाकाली॥
मैया जय चामुण्डा माता।

ऋद्धि सिद्धि देकर माँ, जन के पाप हरे।
शरणागत जो होता, आनन्द राज करे॥
मैया जय चामुण्डा माता।

शुभ गुण मन्दिर वाली, 'ओम' कृपा कीजै।
जीवन के दुःख संकट, आकर हर लीजै॥
मैया जय चामुण्डा माता।

श्री महावीर (तीर्थंकर) चालीसा

॥ दोहा ॥

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम॥
सर्व साधु और सरस्वती, जिन मन्दिर सुखकार।
महावीर भगवान को, मन मंदिर में धार॥

॥ चौपाई ॥

जय महावीर दयालु स्वामी। वीर प्रभु तुम जग में नामी॥
वर्धमान है नाम तुम्हारा। लगे हृदय को प्यारा प्यारा॥
शांत छवि मन मोहिनी मूरत। शांत हँसीली सोहनी सूरत॥
तुमने वेश दिगंबर धारा। कर्म-शत्रु भी तुमसे हारा॥
क्रोध मान अरु लोभ भगाया। मोह-माया तुमसे डर खाया॥
तू सर्वज्ञ सर्व का ज्ञाता। तुझको दुनिया से क्या नाता॥
तुझमें नहीं राग और द्वेष। वीतराग तू हितोपदेश॥
तेरा नाम जगत में सच्चा। जिसको जाने बच्चा बच्चा॥
भूत प्रेत तुमसे भय खावें। व्यंतर राक्षस सब भाग जावें॥
महा व्याध मारी न सतावे। महा विकराल काल डर खावे॥

BMT

काला नाग होय फन धारी। या हो शेर भयंकर भारी॥
ना ही कोई बचाने वाला। स्वामी तुम ही करो प्रतिपाला॥
अग्नि दावानल सुलग रही हो। तेज हवा से भड़क रही हो॥
नाम तुम्हारा सब दुख खोवे। आग एकदम ठंडी होवे॥
हिंसामय था भारत सारा। तब तुमने कीना निस्तारा॥
जन्म लिया कुंडलपुर नगरी। हुई सुखी तब जनता सगरी॥
सिद्धार्थ जी पिता तुम्हारे। त्रिशाला की आँखों के तारे॥
छोड़ के सब झंझट संसारी। स्वामी हुए बाल ब्रह्मचारी॥
पंचम काल महा दुखदायी। चाँदनपुर महिमा दिखलाई॥
टीले में अतिशय दिखलाया। एक गाय का दूध गिराया॥
सोच हुआ मन में ग्वाले के। पहुँचा एक फावड़ा लेके॥
सारा टीला खोद गिराया। तब तुमने दर्शन दिखलाया॥
जोधराज को दुख ने घेरा। उसने नाम जपा जब तेरा॥
ठंडा हुआ तोप का गोला। तब सब ने जयकारा बोला॥
मंत्री ने मंदिर बनवाया। राजा ने भी दरब लगाया॥
बड़ी धर्मशाला बनवाई। तुमको लाने की ठहराई॥
तुमने तोड़ी बीसों गाड़ी। पहिया खिसका नहीं अगाड़ी॥

ग्वाले ने जब हाथ लगाया। फिर तो रथ चलता ही पाया॥
पहले दिन बैसाख वदी के। रथ जाता है तीर नदी के॥
मीना गुजर सब ही आते। नाच कूद सब चित उमगाते॥
स्वामी तुमने प्रेम निभाया। ग्वाले का तुम मान बढ़ाया॥
हाथ लगे ग्वाले का तब ही। स्वामी रथ चलता हैं तब ही॥
मेरी हैं टूटी सी नैया। तुम बिन स्वामी कौन खिवैया?॥
मुझ पर स्वामी जरा कृपा कर। मैं हु प्रभु तुम्हारा चाकर॥
तुमसे मैं प्रभु कुछ नहीं चाहूँ। जनम जनम तव दर्शन पाऊँ॥
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे। वीर प्रभु को शीश नवावे॥

सोरठा

नित ही चालीस बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगंध अपार, वर्धमान के सामने॥
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहीं संतान, नाम वंश जग में चले॥

BMT

श्रीनैना देवी जी की आरती

तेरा अद्भुत रूप निराला, आजा! मेरी नैना माई ये।
तुझपै तन मन धन सब वारूं, आजा मेरी नैना माई ये।
सुन्दर भवन बनाया तेरा, तेरी शोभा न्यारी।
नीके नीके खम्भे लागे, अद्भुत चित्तर कारी।
तेरा रंग बिरंगा द्वारा॥ आजा...
झाँझा और मिरदंगा बाजे, और बाजे शहनाई।
तुरई नगाड़ा ढोलक बाजे, तबला शब्द सुनाई।
तेरे द्वारे नौबत बाजे॥ आजा...
पीला चोला जरद किनारी, लाल ध्वजा फहराये।
सिर लालों दा मुकुट विराजे, निगाह नहिं ठहराये।
तेरा रूप न वरना जाए॥ आजा...
पान सुपारी ध्वजा, नारियल भेंट तिहारी लागे।
बालक बूढ़े नर नारी की, भीड़ खड़ी तेरे आगे।
तेरी जय जयकार मनावे॥ आजा...
कोई गाए कोई बजाए, कोई ध्यान लगाये।
कोई बैठा तेरे आंगन में, नाम की टेर सुनाये।

कोई नृत्य करे तेरे आगे॥ आजा...
कोई मांगे बेटा बेटी, किसी को कंचन माया।
कोई माँगे जीवन साथी, कोई सुन्दर काया।
भक्त सब किरपा तेरी मांगे॥ आजा...

BMT

श्रीकाली जी की आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गायें भारती।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती॥
माता तेरे भक्त जनों पर भीड़ पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी॥
सौ सौ सिंहों से बलशाली अष्ट भुजाओं वाली।
दुखियों के दुःख को निवारती।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती॥
माँ बेटे का इस जग में है बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता॥
सब पर करुणा दरसाने वाली अमृत बरसाने वाली।
दुखियों के दुख को निवारती।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती॥
नहीं मांगते धन और दौलत ना चांदी ना सोना।
हम तो माँगे माँ तेरे मन का एक छोटा-सा कोना॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली लाज बचाने वाली।

सतियों के सत को संवारती।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती॥
अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुन गायें भारती।
ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती॥

BMT

श्रीमहाकाली जी की आरती

मंगल की सेवा, सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे॥
सुन जगदम्बे, कर न विलम्बे, संतन के भण्डार भरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे॥
बुद्धि विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे॥
जब–जब भीर पड़ी भक्तन पर, तब–तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे॥
बार–बार तैं सब जग मोह्यो, तरुणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या भोग करे॥
संतन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे॥
ब्रह्मा विष्णु महेश सहसफण लिए, भेंट देन तेरे द्वार खड़े।
अटल सिहांसन बैठी माता, सिर सोने का छत्र धरे॥
वार शनिश्चर कुमकुम वरणी, जब लाकुड़ पर हुक्म करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे॥

खंग खप्पर त्रिशूल हाथ लिए, रक्तबीज कूं भस्म करे।
शुम्भ निशुम्भ क्षणहि में मारे, महिषासुर को पकड़ दले॥
आदितवारि आदि की वीरा, जन अपने का कष्ट हरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे॥
कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर करे॥
सौम्य स्वभाव धरयो मेरी माता, जन की अरज कबूल करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे॥
सात बार की महिमा बरनी, सब गुण कौन बखान करे।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करे॥
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साधक तेरी भेंट धरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे॥
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिव शंकर ध्यान धरे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चँवर कुबेर डुलाय रहे॥
जय जननी जय मातु भवानी, अटल भवन में राज करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे॥

BMT

श्रीअहोई अष्टमी आरती

जय अहोई माता, जय अहोई माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता॥
जय अहोई माता...॥

ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला तू ही है जगमाता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥
जय अहोई माता...॥

माता रूप निरंजन, सुख-सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, नित मंगल पाता॥
जय अहोई माता...॥

तू ही पाताल बसंती, तू ही है शुभदाता।
कर्म-प्रभाव प्रकाशक, जगनिधि से त्राता॥
जय अहोई माता...॥

जिस घर थारो बासो, वाही में गुण आता।
कर न सके सोई कर ले, मन नहीं घबराता॥
जय अहोई माता...॥

तुम बिन सुख न होवे, न कोई पुत्र पाता।

खान-पान का वैभव, तुम बिन नहीं आता॥
जय अहोई माता...॥

शुभ गुण सुंदर युक्ता, क्षीर निधि जाता।
रत्न चतुर्दश तोकूं, कोई नहीं पाता॥
जय अहोई माता...॥

श्रीअहोई माँ की आरती, जो कोई गाता।
उर उमंग अति उपजे, पाप उतर जाता॥
जय अहोई माता...॥

BMT

श्रीलक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत, हर-विष्णू-धाता॥ॐ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ॐ॥
दुर्गारूप निरञ्जनि, सुख-सम्पति-दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि धन पाता॥ॐ॥
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥ॐ॥
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता॥ॐ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव सब तुमसे आता॥ॐ॥
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥ॐ॥
महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ॐ॥

श्रीगायत्री आरती

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जग पालन कर्त्री॥
दु:ख शोक भय क्लेश कलह दारिद्र्य दैन्य हर्त्री।
ब्रह्म रूपिणी प्रणत पालिनी जगतधातृ अम्बे॥
भवभयहारी जनहितकारी सुखदा जगदम्बे।
भय हारिणि भव तारिणि अनघे अज आनन्द राशी॥
अविकारी अघहरी अविचलित अमले अविनाशी।
कामधेनु सच्चित् आनन्दा जय गंगा गीता॥
सविता की शाश्वती शक्ति तुम सावित्री सीता।
ऋक्, यजु साम अथर्व प्रणयिनी प्रणव महामहिमे॥
कुण्डलिनी सहस्रार सुषुम्ना शोभा गुण गरिमे।
स्वाहा स्वधा शची ब्रह्माणी राधा रुद्राणी॥
जय सतरूपा वाणी विद्या कमला कल्याणी।
जननी हम हैं दीन हीन दु:ख दारिद्र्य के घेरे॥
यदपि कुटिल कपटी कपूत तऊ बालक हैं तेरे।
स्नेह सनी करुणामयि माता चरण शरण दीजै॥

BMT

श्री सत्यनारायणजी की आरति, जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वाञ्छित फल पावैं॥जय.॥
ॐ जय श्रीलक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जनपातक हरणा॥जय.॥

श्री कुंजबिहारी जी की आरती

आरती कुंज बिहारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की॥
आरती कुंज बिहारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की॥
गले में बैजंती माला, बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला॥
श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की॥
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी तिलक, चंद्र-सी झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारी की। श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की॥
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसन को तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग ग्वालिन संग,
अतुल रति गोपकुमारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की॥
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल मल हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह-भंगा,
बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच,

BMT

चरन छबि श्रीबनवारी की। श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की॥
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दाबन बेनू,
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चांदनी चंद, कटत भव-फंद,
टेर सुनु दीन दुखारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की॥
आरती कुंज बिहारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की॥

आरती श्री जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, छिन में दूर करे।
ॐ जय जगदीश हरे...
जो ध्यावै फल पावै, दुःख विनसै मन का, प्रभु! दुख विनसै मन का।
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तन का।
ॐ जय जगदीश हरे...
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी, प्रभु! शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।
ॐ जय जगदीश हरे...
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, प्रभु! तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।
ॐ जय जगदीश हरे...
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, प्रभु! तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।
ॐ जय जगदीश हरे...
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती, प्रभु! सबके प्राणपती।

BMT

किस विधि मिलूं दयामय! मैं तुमको कुमती।
ॐ जय जगदीश हरे...
दीनबन्धु दुखहर्त्ता, तुम ठाकुर मेरे। प्रभु! तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।
ॐ जय जगदीश हरे...
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा, प्रभु! पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा।
ॐ जय जगदीश हरे...
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा, प्रभु! सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।
ॐ जय जगदीश हरे...
श्याम सुंदर जी की आरती जो कोई नित गावे, प्रभु! जो कोई नित गावे।
कहत शिवानंद स्वामी मन वांछित फल पावे।
ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, छिन में दूर करे।
ॐ जय जगदीश हरे...

श्रीमद् भागवत् पुराण आरती

आरती अति पावन पुराण की।
धर्म भक्ति विज्ञान खान की॥ टेक॥
महा पुराण भागवत निर्मल।
शुक मुख विगलित निगम कल्प फल॥ आरती
परमानन्द सुधा-रसमय फल।
लीला रति रस निधान की॥ आरती
कलिमल-मथनि त्रिताप-निवारिणी।
जन्म-मृत्युमय भव भय हारिणी॥ आरती
सेवत सतत सकल सुख कारिणी।
सुमहौषधि हरि-चरित गान की॥ आरती
विषय विलास विमोह विनाशिनी।
विमल विराग विवेक विकाशिनी॥ आरती
भगवत तत्व रहस्य प्रकाशिनी।
परम ज्योति परमात्मज्ञान की॥ आरती
परमहंस मुनि मन उल्लासिनी।
रसिक हृदय रस रास-विलासिनी॥ आरती

BMT

भुक्ति-मुक्ति रति प्रेम सुवासिनी।
कथा अकिंचन-प्रिय सुजान की॥ आरती

श्रीगंगा जी की आरती

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्यावत, मनवांछित फल पाता॥
ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।

चंद्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता॥
ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुख पाता॥
ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।

एक ही बार जो तेरी, शरणागति आता।
यम की त्रास मिटा कर, परम गति पाता॥
ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।

आरती मात तुम्हारी, जो जन नित गाता।
दास वही सहज में, मुक्ति को पाता॥
ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।

BMT

सिद्ध श्री बाबा बालक नाथ जी की आरती

ॐ जय कलाधारी हरे, स्वामी जय पौणाहारी हरे।
भगत जनों की नइया, भव से पार करे॥ ॐ जय
बालक उम्र सुहानी, नाम बाबा बालक नाथा।
अमर हुए शंकर से, सुन कर अमर गाथा॥ ॐ जय
शीश पे बाल सुनहरी, गल रुद्राक्षी माला।
हाथ में झोली चिमटा, आसन मृगछाला॥ ॐ जय
सुन्दर सेली सिंगी, वेरागन सोहे।
गो पालक रखवाला, भगतन मन मोहे॥ ॐ जय
अंग भभूत रमाई, मूरति प्रभु अंगी।
भय भंजन दुःख नाशक, भर्तरी के संगी॥ ॐ जय
रोट चढ़त रविवार को, फल मिश्री मेवा।
धूप दीप चन्दन से, आनन्द सिद्ध देवा॥ ॐ जय
भगतन हित अवतार लियो, स्वामी देख के कलि काला।
दुष्ट दमन शत्रुघ्न, भगतन प्रतिपाला॥ ॐ जय
बाबा बालक नाथ जी की आरती, जो कोई नित गावे।
कहत है निर्मल तेरा, कहत है सतगुरु मेरा सुख सम्पत्ति पावे॥ ॐ जय

सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

विनियोग

ॐ अस्य श्रीकुञ्जिकास्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीत्रिगुणात्मिका देवता, ॐ ऐं बीजं, ॐ ह्रीं शक्तिः, ॐ क्लीं कीलकम्, मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥ 1॥
न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥ 2॥
कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम्॥ 3॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्॥ 4॥

BMT

अथ मंत्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।
ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल
प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं
लं क्षं फट् स्वाहा।

इति मंत्रः

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥ 1 ॥
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि॥ 2 ॥
जाग्रतं हि महादेवि! जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका॥ 3 ॥
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी॥ 4 ॥
विच्चे चाऽभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि॥ 5 ॥
धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि! शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥ 6 ॥
हुं हुं हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी।

आरती एवं चालीसा कोश

भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः॥ 7 ॥
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।
म्लां म्लीं म्लूं मूलविस्तीर्णा–कुञ्जिकायै नमो नमः।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्र सिद्धिं कुरुष्व मे॥ 8 ॥
इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति॥ 9 ॥
यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा॥10॥

इति श्रीरुद्रयामलेस्थ-गौरीतन्त्रे शिव-पार्वती संवादे
कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

BMT

श्रीमहिषासुरमर्दिनी (संकटा) स्तुति

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 1 ॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मनिरोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 2 ॥

अयि जगदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखरिशिरोमणि तुङ्गहिमालय शृङ्गनिजालय-मध्यगते।
मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि महिषविदारिणि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 3 ॥

अयि निजहुंकृति मात्रनिराकृतधूम्रविलोचनधूम्रशते
समरविशोषितरोषितशोणितबीजसमुद्भवबीजलते
शिवशिव शुम्भनिशुम्भमहाहवतर्पितभूतपिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 4 ॥

अयि शतखण्डविखण्डितरुण्डवितुण्डितशुण्डगजाधिपते
निजभुजदण्डनिपातितचण्डविपाटितमुण्डभटाधिपते।
रिपुगजगण्डविदारणचण्डपराक्रमशौण्डमृगाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 5 ॥

धनुरनुषङ्गरणक्षणसङ्गपरिस्फुरदङ्गनटत्कटके
कनकपिशङ्गपृषत्कनिषङ्गरसद्भटशृङ्गहताबटुके।
हतचतुरङ्गबलाक्षितिरङ्गघटद्बहुरङ्गरटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 6 ॥

अयि रणदुर्मद शत्रुवधाद्धुरदुर्धरनिर्भरशक्तिभृते
चतुरविचारधुरीणमहाशयदूतकृतप्रमथाधिपते।
दुरितदुरीहदुराशयदुर्मतिदानवदूतदुरन्तगते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुत॥ 7 ॥

अयि शरणागतवैरिवधूजनवीरवराभवदायिकरे
त्रिभुवनमस्तकशूलविरोधिशिरोधिकृतामलशूलकरे।
दुमिदुमितामरदुन्दुभिनादमुहुर्मुखरीकृतदिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 8 ॥

सुरललनाततथेयितथेयितथाभिनयोत्तरनृत्यरते

BMT

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 17 ॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 18 ॥

कनकलसत्कलशीकजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवम्
भजति स किं न शचीकुचकुम्भनटीपरिरम्भसुखानुभवम्।
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 19 ॥

तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते
किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखीसुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 20 ॥

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं-कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥ 21 ॥

स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत्।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत्॥ 22 ॥

BMT

मुण्डमालातन्त्रोक्तं महाविद्यास्तोत्रम्

ॐ नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्डविनाशिनी।
नमस्ते कालिके कालमहाभयविनाशिनि॥
शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे।
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्॥
जगत् क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्।
करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम्॥
हरार्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम्।
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालङ्कारभूषिताम्॥
हरप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्।
सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्॥
मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिङ्गशोभिताम्।
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्॥
उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम् ।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्॥
श्यामाङ्गी श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्॥

आरती एवं चालीसा कोश

विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।
आद्यामाद्यगुरोराद्यामाद्यनाथ प्रपूजिताम्॥
श्री दुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्॥
त्रिपुरां सुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्॥
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्॥
सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यां गुणवर्जिताम्।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धिदाम्॥
विद्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।
महेशभक्तां माहेशीं महाकाल प्रपूजिताम्॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्।
रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजमर्दिनीम्॥
भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम्।
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्॥
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्।

BMT

अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्राक्षविनाशिनीम्॥
कमलां छिन्नभालांच मातङ्गी सुरसुन्दरीम्।
षोडशीं विजयां भीमां धूमांच वगलामुखीम्॥
सर्वसिद्धिप्रदां सर्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्।
प्रणमामि जगत्तारां सारांच मन्त्रसिद्धये॥
इत्येवंच वरारोहे, स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि॥
कुजवारे चतुर्दश्याममायां जीव वासरे।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षम् आप्नुयात्॥
त्रिपक्षे मन्त्रसिद्धिस्यात्स्तोत्रपाठाद्धि शंकरि।
चतुर्दश्यां निशाभागे, शनि भौम दिने तथा॥
निशामुखे पठेद् स्तोत्रं, मन्त्र सिद्धिम् अवाप्नुयात्।
केवलं स्तोत्र पाठाद्धि, मन्त्र सिद्धिरनुत्तमा॥
जागर्ति सततं चण्डी, स्तोत्र पाठाद् भुजङ्गिनी।
इति मुण्डमालातंत्रोक्तं दशमहाविद्यास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

क्षमा–प्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥

BMT